530

दृष्टि The Vision

drishti

Drishti Mentorship Programme (Mains)-2024

Essay

Name of Candidate:	ARUN KUMAR	Subject/Code:	Essay - 04
UPSC Roll No:	5417292	Date:	2/AUG/2024
Drishti Id:		E-mail Id:	
Centre:	Delhi	Medium:	HINDI

Test Code:

Time allowed: Three Hours	*Maximum Marks: 250*

(To be filled by Evaluator only)

Section	(Essay Topic No.)	Marks Obtained
A		
B		
Total		

Overall Feedback

INSTRUCTIONS

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।
- प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

- The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
- Word limit, as specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

For Student Only

Time Taken	Start Time:	End Time:	Student Signature	Arunkumar
Mode of Examination	Online ✓	Offline		

For Office Use Only

Evaluators Code	Evaluator Sign	Evaluation Date	Reviewers Code	Reviewers Sign

Feedback				
Sr. No	**मापदण्ड/Parameters**	**Max. Marks**	**Section-A (Essay-1)**	**Section-B (Essay-2)**
1.	**परिचय:** विषय की स्पष्टता और सुसंगति। **Introduction:** Clarity of theme and Coherence	10		
2.	**विषय वस्तु:** प्रासंगिकता, विश्लेषण की गहराई और उदाहरणों/साक्ष्यों का उपयोग। **Content:** Relevance, depth of analysis, and use of examples/evidence.	25		
3.	**संरचना और संगठन:** तार्किक प्रवाह, पैराग्राफ संरेखण और विचारों की सुसंगतता। **Structure and Organization:** Logical flow, Paragraph alignment and Coherence of ideas.	20		
4.	**प्रासंगिकता:** विषय से विचलन की अनुपस्थिति, तर्क और पुष्टि/प्रमाणीकरण के बीच संतुलन **Relevance:** Absence of Deviation from Topic, Balance between argument and substantiation.	20		
5.	**भाषा और अभिव्यक्ति:** स्पष्टता, व्याकरण, वाक्यविन्यास, शब्दावली और अभिव्यक्ति **Language and Expression:** Clarity, Grammar, Syntax, Vocabulary and Articulation	20		
6.	**निष्कर्ष:** तर्कों और निष्कर्ष का प्रभावी सारांश। **Conclusion:** Effective summary of arguments and conclusion.	10		
7.	**मौलिकता और रचनात्मकता:** विचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति में नवीनता। **Originality and Creativity:** Innovation in thought and creative expression.	20		
	कुल: Total:	125		

*** UPSC Requirement for Essay Paper:**

*Candidates may be required to write essays on multiple topics. They will be expected to keep **closely to the subject** of the essay to **arrange their ideas in orderly fashion** and to **write concisely.** Credit will be given for **effective and exact expression.***

*** निबंध पेपर के लिए यूपीएससी की अपेक्षा:**

*उम्मीदवार को एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा। विषयों के विकल्प दिये जायेंगे। उनसे आशा की जाती है कि अपने विचारों को निबंध के **विषय के निकट** रखते हुए **क्रमबद्ध** करें तथा **संक्षेप** में लिखें। **प्रभावशाली एवं सटीक अभिव्यक्तियों** के लिये श्रेय दिया जायेगा।*

Copyright – Drishti The Vision Foundation

निम्न खण्ड A व B प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों का हो :

Write two essays, choosing one topic from each of the following Sections A and B, in about 1000-1200 words each: (125 × 2 = 250)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खंड-A/SECTION-A

Topic: "प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार, प्रत्येक को उसकी जरूरत के अनुसार"

"साईं इतना दीजिए जामे कुटुंब समाय
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए।।
→ कबीर

उपर्युक्त पंक्तियां संत कबीर के वितरणमूलक, समतामूलक विचारों को दर्शाती हैं। कबीर मानववादी विचारों से प्रेरित होकर मध्यकालीन समाज में व्यापक असमानताओं को उजागर करते हुए प्रत्येक की सामान्य जरूरतों की पूर्ति हेतु धन वितरण व संसाधन वितरण की बात करते हैं।

भारत में प्रत्येक कालखंड में प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता व जरूरतों के अनुसार संसाधन वितरण की वकालत की गई।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

- ऐसा ही एक संदर्भ वैदिक कालीन समाज में देखने को मिलता है जब ऋग्वेद हमें भूमि संसाधन पर सामुदायिक जरूरतों के हिसाब से स्वामित्व की बात करता है

"सबै भूमि गोपाल की।" ऋग्वेद की यह उक्ति हमें भारतीय समतामूलक दर्शन की याद दिलाती है जो आज के व्यापक असमानता युक्त समाज के लिए सार्थक है और प्रासंगिक भी है

आधुनिक आर्थिक-सामाजिक प्रणालियों के मूल में औद्योगिक क्रांति के प्रभावों को देखा जाता है जिसने प्रत्येक स्तर पर व्यापक असमानता को प्रेरित किया। इन्हीं असमानताओं की जड़ का अध्ययन करते हुए समाजशास्त्री व दार्शनिक कार्लमार्क्स अपनी पुस्तक दास कैपिटल में असमानताओं पर प्रहार करते है समतामूलक राज्य के रूप में साम्यवादी राज्य की कल्पना करते है

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मार्क्स के साम्यवादी राज्य को शोषित, सर्वहारा वर्ग द्वारा शासित किया जाता जहां संसाधनों का वितरण मजदूर समाज करता। अपने इसी साम्यवादी दर्शन में मार्क्स ने कहा था कि प्रत्येक को उसकी क्षमता के अनुसार तथा प्रत्येक को उसकी जरूरत के अनुसार।

इस तरह मार्क्स Egalitarian Society की स्थापना को देखते हैं तथा उनके राज्य में किसी भी प्रकार का शोषण नहीं होगा सभी को अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने हेतु पर्याप्त अवसर मिलेंगे तथा प्रत्येक की जरूरत पूरा करने हेतु संसाधनों तक पहुंच होगी।

हालांकि यह यथार्थवादी कम, आदर्शवादी सिद्धांत ज्यादा लगता है क्योंकि मार्क्स अराजकतावादी राज्य की वकालत करते हुए राज्य को अनिवार्य बुराई मानता है क्योंकि आगे के लिए मजदूर शासन की बागडोर हाथ में लेकर अराजकतापूर्ण व्यवहार से राज्य को चला सकेंगे।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

वितरणमूलक न्याय के इस सिद्धांत को चरितार्थ करने के लिए दुनियाभर में अनेक क्रांतियां हुई तथा सरकारों व शासन व्यवस्थाओं के विभिन्न मॉडलों का प्रयोग किया गया।

जैसे साम्यवादी दर्शन की प्रथम सरकार रूस में लेनिन के नेतृत्व में गठित की गई थी उन्होंने जारशाही व कुलीनता का अंत करके, राष्ट्रीय संसाधनों पर सरकारी नियंत्रण सुनिश्चित किया गया जमींदारों को समाप्त किया गया तथा उन्हें भूमिहीनों के मध्य वितरित किया गया। पंचवर्षीय योजनाओं ने भी वहां प्रत्येक की क्षमतानुसार जरूरतों को पूरा करने का प्रयास किया तथा समानता लाने हेतु निम्न वर्ग का उत्थान किया।

साम्यवादी सरकार का अन्य स्वरूप हमें चीनी क्रांति में देख सकते हैं। जिसमें संसाधनों पर राज्य ने कब्जा करके आर्थिक संसाधनों का व्यावहारिक वितरण किया गया।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अब सवाल उठता है कि सबको क्षमता अनुसार देने तथा जरूरत पूर्ति अनुसार देने से क्या सामाजिक - आर्थिक लाभ भी होगा या हम प्रतिस्पर्धा को खत्म करके इस तरह से नवाचार, रचनात्मकता व कुछ लोगों की विशिष्ट क्षमताओं को नजर अंदाज कर देंगे ?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर बहुआयामी रूप से गंभीर विचार करके दिये जा सकते हैं हालांकि एक सामान्य उत्तर यह हो सकता है कि क्षमता अनुसार वितरण के फल समाज के सभी वर्गों का कल्याण सुनिश्चित करेंगे।

जैसे भारतीय संदर्भ में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों की अवधारणा ने भारत में सामाजिक- आर्थिक न्याय तथा कल्याणकारी राज्य के हितों की पूर्ति हेतु, समाज में धन संकेंद्रण को रोककर सामाजिक न्याय व समानता का मार्ग प्रशस्त किया है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

क्षमता मूलक वितरण के परिणाम स्वरूप राजनैतिक न्याय की स्थापना हेतु भी वैश्विक स्तर पर कार्य किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना तथा बहुआयामी अंतर्राष्ट्रीय संगठन इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। छोटे, कमजोर, गरीब तथा विकासशील राष्ट्रों का राजनैतिक प्रतिनिधित्व तथा उनकी सम्प्रभुता को विकसित बड़े राष्ट्रों से बचाने हेतु, राजनीतिक न्याय का सिद्धान्त कार्य कर रहा है जिसमें प्रत्येक राष्ट्र की क्षमता अनुसार उचित प्रतिनिधित्व दिया जा रहा है।

सामाजिक न्याय की परिधि में लोगों के अधिकार, अवसरों तथा जरूरतों व क्षमताओं की पूर्ति हेतु पहुंच व वहनीयता के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया जा सकता है। वैश्विक स्तर पर सामाजिक न्याय हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ का मानवाधिकारों का सार्वभौमिक घोषणापत्र देखा जा सकता है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भारत में सामाजिक -आर्थिक, राजनैतिक न्याय की अवधारणा को संविधान की प्रस्तावना में अभियुक्त किया गया है

"हम भारत के लोग भारत को संप्रभुता पूर्ण - - - - - - - नागरिकों को - - - - तथा इसके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय सुनिश्चित करने"

दर्शन राष्ट्रवादी उपर्युक्त न्याय का आंदोलन की उपज तथा दुनियाभर में समानता हेतु तथा स्वतंत्रता हेतु किये जा रहे प्रयासों से प्रेरित था।

राष्ट्रीय आंदोलन के पिता कहे जाने वाले "महात्मा गांधी" तो कार्ल मार्क्स से एक कदम आगे बढ़कर राज्य को सात पापों में से एक बुराई मानते थे। कार्लमार्क्स तो साम्यवादी राज्य की बात करता था किंतु गांधी महोदय अराजकतावादी थे उन्होंने हिंद स्वराज में राज्य के अस्तित्व को

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

ही नकार दिया तथा शासन-सत्ता संसाधनों पर सामुदायिक समाज के नियंत्रण को ही स्वीकारा। उन्होंने समाज में समवितरण हेतु लोगों को पहले शिक्षित करने अहिंसावादी मूल्यों की प्रेरणा, हृदयपरिवर्तन तथा दलितों/दमितों कमजोरों के प्रति करुणा के द्वारा वितरण मूलक न्याय की प्रेरणा दी।

वहीं एक अन्य मानववादी व शिक्षाविद डा० अम्बेडकर भी सामाजिक आर्थिक-राजनैतिक न्याय के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कानून के शासन तथा राज्य की शक्ति के प्रयोग द्वारा संसाधन वितरण की बात की।

एक अन्य पश्चिमी दार्शनिक जॉन रॉल्स अपनी पुस्तक The Theory of Justice में न्याय के त्रयी सिद्धांत (सा०, आर्थिक, राजनैतिक) की वकालत करते

हुए आदर्श, नैतिक समाज की कल्पना करते हैं। जॉन रॉल्स कहते हैं कि हमें या राज्य को वैसी नीतियां बनानी चाहिए कि जब हम सबसे निचले पायदान पर भी खड़े हों तो भी हमें उसका लाभ मिले तथा जब हम सबसे उच्च व आर्थिक शिखर पर हों तो भी हमें उसका लाभ मिले। रॉल्स अपने न्यायिक सिद्धांत में, राज्य की न्यूनतम शक्ति को स्वीकार करते हैं तथा पूंजीवाद का भी आंशिक समर्थन करते हुए वे पूंजी व सम्पत्ति को प्राकृतिक अधिकार मानते हैं। रॉल्स प्रतिस्पर्धात्मक समानता के समर्थक हैं, तथा उदारवादी हितवादी व पूंजीवाद का समर्थन करते हुए, सकारात्मक भेदभाव द्वारा वंचितों को मुख्य धारा में लाने की बात करते हैं।

हालांकि कई आधुनिक अर्थशास्त्री व विद्वान क्षमता अनुसार वितरण तथा जरूरतों के हिसाब से संसाधन प्राप्ति को आलोचनात्मक रूप से देखते हैं। उनके अनुसार यह व्यवस्था समाज से प्रतिस्पर्धा को समाप्त करके, उसे गतिहीन बना सकती है।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इन आलोचकों को अपने विचारों व सिद्धांतों पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। उन्हें ऐतिहासिक उद्धरणों को देखना चाहिए कि किस प्रकार असमानताओं ने दुनियाभर में क्रांतियों को प्रेरित किया। हिंसात्मक संघर्षों को जन्म दिया। मध्यपूर्व में तथा अफ्रीकी महाद्वीप में नृजातीय संघर्षों को जन्म दिया है। आधुनिक आतंकवाद भी असमानता की ही उपज है।

भारतीय संदर्भ में उग्रवाद, नक्सलवाद जैसे हिंसात्मक संगठनों का उदय भी विषमतामूलक तथा असमानता व विभाजनकारी शोषित आर्थिक राजनैतिक व सामाजिक प्रणाली में देखा जाना चाहिए। इन्हीं परिस्थितियों व बुराईयों को भांपते हुए गांधी जी ने सर्वोदय सिद्धांत की वकालत की थी।

सभी को अपनी क्षमतानुसार तथा सभी को अपनी जरूरतों के अनुसार न्याय

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

व संसाधन प्राप्ति का समय आ गया है। हमें इसकी कमी के दुष्परिणामों को गंभीरता से लेना होगा। दुनियाभर में असमानता ने संघर्ष व मानव संकट, शरणार्थी संकट व पर्यावरणीय संकटों को जन्म दिया है।

Oxfam व Peace Research Institute की विश्व असमानता रिपोर्ट अमीर-गरीब विभाजन का भयावह आंकड़ा प्रस्तुत करती है। दुनियाभर के 1% अमीरों के पास दुनिया की 50% सम्पत्ति पर कब्जा है तथा 10% के पास 77% सम्पत्ति पर कब्जा है। इस भयानक असमानता ने पर्यावरणीय संकटों को भी तीव्र रूप से प्रेरित किया है। असमानता के डोमिनो प्रभाव ने जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, ग्लोबल वार्मिंग, जैवविविधता ह्रास की प्रक्रिया को तीव्र किया है जिससे गरीबों की जीवन सुभेद्यता बढ़ गई है। इसी संदर्भ में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

- पर्यावरणीय न्याय विद्वानों व शिक्षाविदों के मध्य जोर पकड़ रहा है। ~~मध्य~~ मानव पर्यावरणकेंद्रवाद के मध्य सहजीवी संबंध बनाए रखने हेतु ही गांधी जी ने कहा था —

"प्रकृति प्रत्येक मनुष्य की जरूरतों को पूरा कर सकती है परंतु लालच को नहीं।"

अतः पर्यावरणीय न्याय को सुनिश्चित करने हेतु तथा गरीबों के इसके दुष्प्रभावों से बचाने हेतु आज मानव जाति को सर्वोदय सिद्धांत की जरूरत है।

वितरणमूलक न्याय की स्थापना का एक अन्य आयाम लैंगिक न्याय से भी जुड़ता है। यह बात जगजाहिर है कि महिलाओं के साथ भेदभाव ने मानवजाति का व्यापक नुकसान किया है। हमें महिलाओं की क्षमताओं को अवसर देने होंगे। इसी

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

–संदर्भ में प्रसिद्ध नारीवादी विद्वान कोफी अन्नान ने कहा था कि

"Womens are untapped resouvoire of Talented World."

अब वक्त आ गया है कि महिलाओं को भी प्रत्येक क्षेत्र में भागीदारी के अवसर देकर उनकी पहुंच सुनिश्चित की जाए।

एक प्रमुख मुद्दा यह उठा है कि प्रत्येक को उसकी क्षमता व प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार देने का मार्ग प्रशस्त कैसे हो क्या इसका स्वरूप कोई क्रांति होगी या कोई वैश्विक सरकार की कल्पना।

इस समस्या के समाधान हेतु हमें दीर्घकालिक रणनीति जो कि बहुआयामी बहुहितधारक हो पर काम करना होगा। हमें गांधी के सर्वोदय, विनोबा भावे के भूदान आंदोलन, तथा कारपोरेट गवर्नेंस हेतु CSR (ट्रस्टीशिप) जैसे सिद्धान्तों पर कार्य करते हुए चरणबद्ध तरीके से राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर कार्य करना होगा।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-1

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अतः निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि व्यापक सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-सांस्कृतिक-पर्यावरणीय असमानताओं को दूर करने हेतु तथा संधारणीय लक्ष्यों की प्राप्ति, न्यायपूर्ण समाज की स्थापना हेतु सबको क्षमता अनुसार तथा सबको जरूरत अनुसार, जैसे कार्ल मार्क्स के विचारों को चरितार्थ करने की जरूरत है उपभोक्तावादी, पूंजीवाद को हितवादी, उदारवादी, कल्याणकारी पूंजीवाद में परिवर्तन करने की जरूरत है। तभी हम एक आदर्श व न्यायपूर्ण समाज में शांति व समानता, न्याय की स्थापना कर पायेंगे।

"किसी के पास इतना न हो कि वह दूसरे को खरीद ले, तथा किसी के पास इतना कम न हो कि वह स्वयं को बेच दे॥"

— (दासकैपिटल) कार्लमार्क्स

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Topic: "मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन हर जगह वह जंजीरों में जकड़ा हुआ है"

"सृष्टा ने हमें अमोघ शक्तियों से नवाजा है हमें स्वतंत्रता तथा जन्मजात प्राकृतिक अधिकारों से नवाजा है। जो शक्ति व शासन हमारी स्वतंत्रता व अधिकारों को सीमित करें हमारा, यह नैतिक कर्तव्य है कि हमें उन बंधनों व शक्तियों को उखाड़ देना चाहिए।"

— अमेरिकी संविधान (1789) की प्रस्तावना

अमेरिकी संविधान की प्रस्तावना मानवीय प्राकृतिक स्वतंत्रता के दर्शन को प्रदर्शित करती है यह पहली बार था इतिहास में जब प्राकृतिक स्वतंत्रता को संविधान के रूप में संहिताबद्ध किया गया था। मनुष्य का अस्तित्व उसकी स्वतंत्रता तथा विचारों का ही उपउत्पाद है

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

प्रबोधन कालीन प्रबुद्ध दार्शनिक रूसो ने मानवीय स्वतंत्रता तथा अनेक प्राकृतिक अधिकारों व मासूमियत की वकालत करते हुए कहा था कि "प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है किंतु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा रहता है"

रूसो का आशय मानव की प्राकृतिक अवस्था से है रूसो ने इस स्वतंत्रता की प्राप्ति हेतु मध्यकाल में अपने भावना रूपी चीते को खुला छोड़ दिया था। तथा सर्वत्र सभी रूपों में मानव की राजनैतिक, आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक वैचारिक स्वतंत्रता की वकालत की।

रूसो का मानना था प्राकृतिक मनुष्य स्वभावतः पवित्र, सहृदय था किंतु भौतिकवादी, औद्योगिक विकास, व्यक्तिवादी व पूंजीवादी प्रणालियों ने उसे हिंसक बना दिया तथा उसकी बुद्धि व विवेक भ्रष्ट कर दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ऐतिहासिक संदर्भों पर गौर करते हैं तो हमें उन कारकों की स्पष्ट पहचान हो जाती है जिन्होंने मानवीय स्वतंत्रता को कम किया तथा मनुष्यों को भ्रष्टता की कगार पर लाकर उसके अंदर भय, लालच, हिंसा, पराधीनता जैसी बुराइयों ने जकड़ लिया।

रूसो का प्राकृतिक मानव पवित्र था जो गुफाओं, कंदराओं तथा घने जंगलों में अपने स्वच्छंद जीवन को प्रकृति की गोद में जीता था। उस प्राकृतिक मानव की केवल दो ही जरूरतें थीं भोजन तथा संभोग (प्रजनन)। जिसे वह प्रकृति द्वारा प्रदत्त अवसरों में आसानी से प्राप्त कर लेता था। उसके भय, लालच, प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या का अभाव था वह स्वतंत्र था। किंतु रूसो कहते हैं कि इस आदिम मानव की स्वतंत्रता को भूख की इच्छा तथा संभोग की इच्छा ने सीमित किया था।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh

Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मानवीय विकास व सभ्यता के विकास के क्रम में भौतिक संपत्ति, भूमि तथा संसाधनों पर कब्जा करने की इच्छा ने मनुष्यता की गुलामी का मार्गप्रशस्त किया। मनुष्य हिंसा से भर उठा उसने मानवजाति के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया जो ताकतवर हुए उनका वर्चस्व उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया जिसने ~~ग~~ सर्वत्र गुलामी, असमानता की दीवारों का निर्माण किया।

मध्यकाल में शासकीय विचारों, युद्धों, पुरोहितों के प्रवचनों आदि ने मानसिक गुलामी का मार्ग प्रशस्त किया जिसमें ~~मानवजाति~~ मनुष्यता के पैरों में गुलामी की जंजीरों ने अपनी पकड़ मजबूत की। ~~वाणिज्यवादी~~

वाणिज्यवादी व्यापार प्रणाली, अधिक से अधिक धन की लालसा, भूमि पर कब्जा करने की मनसा ने मानव जाति को हिंसा, भ्रष्टाचार, क्रोध,

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

ईर्ष्या, लालच से भर दिया जिसने अफ्रीका, एशिया जैसे अंध महाद्वीपों से गुलाम व दास व्यापार को प्रेरणा मिली। यह मनुष्यता की गुलामी का सबसे भयावह उदाहरण है।

आधुनिक काल में भी जब वाणिज्यवाद पतन की कगार पर था तथा पूंजीवाद अपने आगमन की दस्तक दे रहा था तब साम्राज्यवादी ताकतों का उदय, तथा उपनिवेशिक व्यापार व आर्थिक - राजनैतिक प्रणाली ने मनुष्यता की गुलामी की दास्तां का भी नवीन अध्याय शुरू किया। पूंजीवादी व्यवस्था ने मनुष्य के प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक - आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व मनोवैज्ञानिक पर अपना प्रभाव जमा तथा मनुष्यता को गुलामी के अंधकार में डुबो दिया। इस गुलामी से आजादी की जुबान तभी हुई जब दुनियाभर में आजादी के लिए लड़ाइयां लड़ी गई। स्वतंत्रता आंदोलन हुए।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अब सवाल उठता है कि इन आजादी की लड़ाइयों ने क्या मनुष्यता को क्या सच में आजाद कराया? या कुछ संकीर्ण राजनैतिक आजादी तो मिली किंतु मानसिक गुलामी व परतंत्रता जस की तस बनी रही।

हमें इन सवालों के जवाब गंभीर दार्शनिक विचारों पर गहन विश्लेषण करके ही मिल सकते हैं कि क्या मनुष्य की राजनैतिक आजादी ही संपूर्ण है या उसे आजादी के व्यापक स्पेक्ट्रम को समझते हुए मानव मस्तिष्क को उन शिखरों तक ऊंचा उठाना है जहां सूर्य उसको उद्दीप्यमान करे तथा गुलामी की बेड़ियां उसको छू भी न पाये।

~~दरअसल~~ दरअसल रूसो जब कहता है कि मनुष्य प्रत्येक जगह जंजीरों में जकड़ा हुआ है तो उसके व्यापक अर्थ हैं। वह सिर्फ राजनैतिक गुलामी की बात नहीं करते जैसे —

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मनुष्य के जन्म के बाद उसकी पारिवारिक व शैक्षणिक स्थिति उसकी समाजीकरण की प्रक्रिया तय करती है तथा उसके स्वतंत्र स्वछंद विचारों को परिवार, समाज, शैक्षणिक संस्थाऐं अपने अनुरूप ढालने का प्रयास करते हैं व उसकी धार्मिक स्वतंत्रता से लेकर नैतिक विचारधारा तथा सोचने समझने की प्रक्रिया को सामाजिक अनुकूलन के अनुरूप कर देते हैं। जिससे वह बालक अपने स्वाभाविक स्वतंत्र प्रतिरूप को प्राप्त नहीं कर पाता है और अंततः व्यक्ति एक सामाजिक उत्पाद बनकर रह जाता है।

इसी संदर्भ में एक अन्य आयाम आर्थिक गुलामी का है व्यक्ति प्राकृतिक जीवन में अर्थ को इतना महत्व नहीं देता है किंतु प्रचलित आर्थिक प्रणालियाँ उसमें लालच तथा धन के प्रति आशक्ति भरकर अपनी इच्छाओं का गुलाम बना देती है जिसकी परिणति में वह या तो

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गुलाम बन जाता है या उस रोजगारी ववस्था का एक सदस्य बनकर शोषित बन जाता है।

भौतिक वस्तुओं में वह अपने सुख व आनंद की तलाश करने लगता है जिसमें वह विलासितापूर्ण वस्तुओं सोना, चांदी का संग्रह करते रहता है तथा आजीवन अपनी इच्छाओं को भौतिकता की गुलामी में लगा देता है।

गुलामी की बेड़ियों का एक आयाम वैचारिक व मनोवैज्ञानिक गुलामी से जुड़ता है जिस समाज में स्वतंत्र विचारों को कम महत्व दिया जाता है वहां मनुष्यता वैचारिक रूप से रूढ़ियों की गुलाम बनी रहती है।

उदाहरण के लिए आधुनिक भारत में व्याप्त सामाजिक बुराइयों, जातिव्यवस्था महिलाभेदभाव के मूल में सड़ हुए मानसिक तथा रूढ़िगत विचार ही थे जिन्होंने समाज को गुलामी की ओर धकेला।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh

drishti

Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

मनुष्य स्वतंत्र प्राकृतिक चिंतन में विशुद्ध प्रकृतिवादी है तथा वह प्रकृति को ही संपूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना करने वाली शक्ति मानता था किन्तु दुनियाभर में कई धर्म समुदायों, मतों, पंथों की स्थापना ने मनुष्यता को धार्मिक - आध्यात्मिक गुलामी का मार्ग प्रशस्त किया। मनुष्य जाति के स्वच्छंद विचारों को पाखण्डवादी, अंधविश्वास ने अपनी बेड़ियों में जकड़ लिया जिसके परिणाम भयावह हुए तथा धरती पर मनुष्य - मनुष्य की हत्या धर्म को बचाने उसकी पवित्रता की अखण्डता की रक्षा हेतु करने लगा।

उदाहरण के लिए धर्मयुद्धों, समुदायवादी दंगों, धार्मिक हिंसाओं व अंधविश्वासों को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है।

अब सवाल यह उठता है कि क्या कभी मानवजाति अपनी परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ पायेगी। क्या वह पा सकेगी अपने उस स्वरूप को जो ईश्वर ने बनाया था।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

प्रगतिशील मनुष्य ने कई क्षेत्रों में अपने विराट स्वरूप को पाने के लिए कितने सामाजिक समझौतों दार्शनिक सिद्धांतों की रचना की है ताकि वह अपनी सुंदरता व स्वतंत्रता को बचाए रख सके तथा मनुष्य जाति के गौरव को हिमशिखर तक ऊंचा उठा सके।

प्रसिद्ध नृजातीय विज्ञान के विद्वान Michael Adas अपनी पुस्तक The Moral Economy में मनुष्य की आर्थिक आजादी के दार्शनिक पक्षों का उद्घाटन करते हैं। Michael Adas अपने अध्ययन में दक्षिणीपूर्वी एशिया तथा दक्षिणी अफ्रीका की जनजातियों का अध्ययन करते हुए उनके द्वारा अपनायी जाने वाली कृषि पद्धतियां, व्यापार प्रणाली तथा सामुदायिकता पूर्ण अर्थव्यवस्था को मनुष्यता की आजादी की राह बताते हैं जिसको अपनाकर मानव पूंजीवादी गुलामी से स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अन्य अमेरिकी विद्वान James. C. Scott अपनी पुस्तक The Art of not being Governed में भारतीय उत्तरपूर्व तथा दक्षिणपूर्वी एशियाई जनजातियों के अध्ययन में उनकी सांस्कृतिक प्रथाओं, जनजातीय सामुदायिकता, पर्यावरणीय जीविका, कृषि प्रथाओं को अपनाने की सलाह देते हुए दुनियाभर के लोगों को मानवद्वारा बनाये गये शोषण व परतंत्रता के कुचक्र से आजादी की वकालत करते हैं।

वहीं हीगल जैसे विद्वान मनुष्य की परतंत्रता को उसके विचारों में देखता है उसके वैचारिक परिवर्तन करके उसको आजादी की राह प्रस्तुत करता है

कार्ल मार्क्स, हीगल को खारिज करते हुए मनुष्य की परतंत्रता को शोषणकारी सामाजिक आर्थिक प्रणाली में देखता है मार्क्स व्यापक स्तर में स्वतंत्रता की व्याख्या करता है उसके अनुसार सामाजिक व आर्थिक दशाएं ही विचार व मानसिकता का निर्धारण करते हैं।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सामाजिक - आर्थिक परिवर्तनों से ही मनुष्य की आजादी का मार्ग निकलेगा जब संसाधन वितरण क्षमतानुसार व जरूरत के अनुसार होगा तो ना कोई शोषक होगा तथा न कोई शोषित होगा। मनुष्य अपनी जिज्ञासाओं अपनी इच्छाओं की पूर्ति प्राकृतिक सम्बन्धों को बनाए रखते हुए कर पायेगा।

आधुनिक राजनेता नेल्सन मण्डेला ने तो शिक्षा तथा संवैधानिक अधिकारों को ही प्रत्येक व्यक्ति की आजादी व अधिकारों की स्वतंत्रता प्राप्ति की मूल भावना के रूप में देखा है।

अब सवाल यह उठता है कि क्या मनुष्य रूसो के भावनात्मक दर्शन के अनुसार सर्वत्र गुलाम है या उसने आजादी प्राप्त कर मानवजाति को शिखर पर पहुंचाया है। रूसो का विचार शुद्ध भावनात्मक दर्शन कहना उचित नही होगा

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

यह सत्य है कि रूसो ने अपने भावनाओं को खुला छोड़ दिया है किंतु यह भी सत्य है कि मनुष्य अपनी स्वतंत्रता को जी रहा है तथा वह अपनी बुद्धि कौशल, वैज्ञानिक नवाचारों से प्रकृति के शासक के रूप में व्यवहार कर रहा है उसने आकाश से लेकर पाताल तक, अणु से लेकर परमाणु तक, नैनो प्रौद्योगिकी से लेकर जैव प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स से लेकर इंडिग्युलिटी तक सब जगह अपनी स्वतंत्र इच्छाओं की पूर्ति हेतु अपने समृद्ध ज्ञान का परिचय दिया है मनुष्य ने हर क्षेत्र में उसके विकास रोकने वाली बेड़ियों को पीछे छोड़ दिया है तथा नित नई ऊंचाइयों को छूते हुए नए झंडे गाड़ रहा है।

अत: रूसो का मनुष्य की स्वतंत्रता व सर्वत्र गुलामी की जंजीरों का विचार आदर्शवादी व अराजक आदिम प्रथा का सूचक है वह भौतिकता द्वारा मनुष्य की भूख्यता व उसके प्रति आसक्ति को प्रतिबिंबित करता है। भारतीय कवियत्री ने स्वतंत्रता संबंधी कहा था →

"बांध लेंगे क्या यह तुझको मोम के बंधन सजीले
रोक लेंगे क्या यह तुझको तितलियों के पंख रंगीले
है तुझे अंगार शैय्या पर चिन्ह अपने छोड़ जाना
जाग तुझको दूर जाना, जाग तुझको दूर जाना।"

Remarks for Essay-2

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SPACE FOR ROUGH WORK

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रत्येक को अपनी क्षमता के अनुसार

कोई इतना धोखेबाज़ प्राणी कुटुंब समाज — वैदिक काल
में भी भूखा न रहे... (सबसे प्राचीन)
कार्ल मार्क्स, रूसी क्रांति, फ्रांस क्रांति

Body क्षमता अनुसार क्यों
— DPSP
— राजनीतिक न्याय
सामाजिक न्याय, ऐतिहासिक पूंजीवाद
गांधी, अम्बेडकर
जॉन रॉल्स का न्याय
आर्थिक न्याय
अवसर, बंधुत्व, स्वतंत्रता
गांधी
कार्ल मार्क्स, हीगल
समाजवाद — रूसी क्रांति

क्षमता अनुसार न देने के नुकसान

- क्रांतियां — फ्रांस, अमेरिका
- व्यापक असमानता
- संघर्ष — अरब, प० देशों में; एशियाई देशों में; Global South
- आतंकवाद
- भारत में उग्रवाद, नक्सलवाद
→ आगे की राह — वॉरेन बफेट मॉडल, फिलैंथ्रॉपी, ऐतिहासिक पूंजीवाद, कल्याणकारी राज्य

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

SPACE FOR ROUGH WORK

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Topic B

Intro – आंतरिक स्वतंत्रता की प्रस्तावना

Body

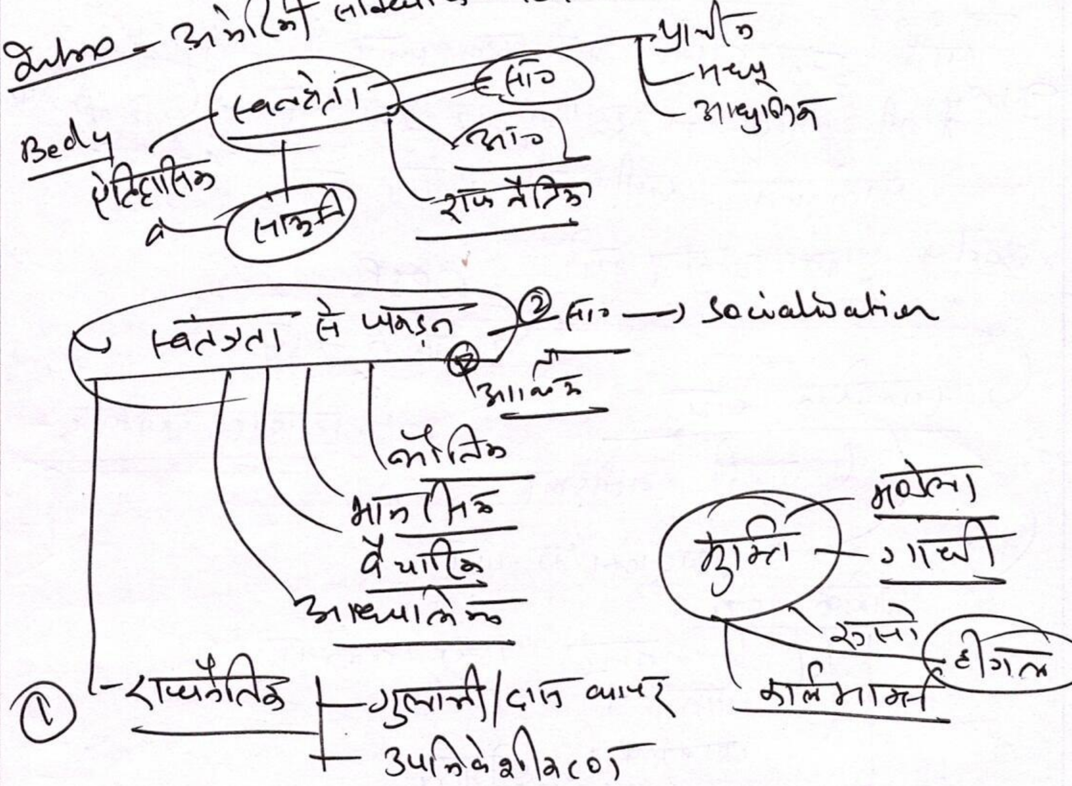

Conclusion

पंछी बोले क्या यह तुमको मंज़ूर नहीं
[illegible] बोले क्या यह तुमको तितलियों
के पंख रंगीन
है [illegible]
[illegible]

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation